बाइबल टीचर

वर्ष 18 जुलाई 2021 अंक 8

सम्पादकीय

पास्टर और प्रचारक

अक्सर लोगों को यह कहते हुए सुना जाता है कि मैं ''इस चर्च का पास्टर हूँ।'' प्रेरित पौलुस, पतरस और यूहन्ना ऐसे प्रचारक थे कि वे कभी भी अपने को पास्टर नहीं कहते थे। यह लोग बाइबल और परमेश्वर के विषय में लोगों को सिखाते थे। इनका कार्य यह नहीं था कि संडे को चर्च लगाना है, आज कई प्रचारक कहते है, कि हमें चर्च लगाना है। बाइबल में हमें ऐसी भाषा-शैली कहीं नहीं मिलती।

आज पास्टर ''शब्द काफी इस्तेमाल किया जाता है। यदि आप अपनी बाइबल को देखे तो आप देखेंगे कि प्रचारक और पास्टर दो अलग-अलग कार्य है। (इफिसियों 4:11) यह प्रेरित लोग थे, भविष्यदूक्ता थे, प्रचारक थे, पास्टर और शिक्षक थे। आज लोग अपने को प्रोफेट, प्रेरित और पास्टर कहलाना बहुत पसंद करते हैं। कलीसिया में प्रीचर या प्रचारक होते हैं, जिनका काम सुसमाचार को बताना है और बाइबल बताती है कि जो पास्टर होते हैं वे बुजुर्ग होते है जिन्हें भेड़ों के रखवाले या चरवाहे भी कहा जाता है। ये लोग मैम्बर्स या सदस्यों की आत्माओं की रखवाली करते हैं। प्रेरितो 20 में हम पढ़ते हैं प्रेरित पौलुस, कलीसिया के बुर्जुगों या ऐल्डर से कहता है कि, ''इसलिये अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो, जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लोहू से मोल लिया है'' (प्रेरितों 20:28)। फिलप्पुस एक प्रचारक था (प्रेरितों 21:8)। वह पास्टर नहीं था। तीमोथी भी एक प्रचारक था (2 तीमु. 4:5)। परन्तु आज जहां भी देखो हर कोई यही कहता है कि मैं पास्टर हूँ। बाइबल में चरवाहा शब्द यीशु के लिये भी इस्तेमाल हुआ है, जैसे कि आप यूहन्ना 10:11, 14, 16, इब्रा. 13-20 और 1 पतरस 2:25 में पढ़ते हैं।

नये नियम में जो पास्टर शब्द इस्तेमाल हुआ है वो बुजुर्ग लीडर और कलीसिया के अगुवे होते हैं। इन पास्टर या ऐल्डर की कुछ योग्यताएं होती है और यह कलीसिया द्वारा चुने जाते हैं। (1 पतरस 5:1-2)।

आत्माओं की रखवाली करना या सदस्यों की चौकीदारी करना ऐल्डर्स या पास्टर का कार्य है और यह जिम्मेदारी प्रचारकों को नहीं बल्कि ऐल्डर्स को दी गई है, और यह भी लिखा है कि उन्हें इसका जवाब भी देना पड़ेगा। कई बार चर्च के लीडर अपनी पदवियों के बारे में इतना ध्यान देने लगते हैं कि वे यह भूल जानते हैं

कि उनका काम प्रचार करने का है। प्रचारकों को यीशु की आज्ञा जो उसने मत्ती 28:18-19 में दी थी उस पर अधिक ध्यान देना चाहिए। आज कलीसियाएं इसलिये नहीं बढ़ रही क्योंकि प्रचारक पास्टरगिरी अधिक पसंद करते हैं।

प्रचारक को एक सेवक भी कहा जाता है, क्योंकि ये लोग कलीसिया की सेवा करते हैं। एक प्रचारक लोगों के पास जाकर उनको बाइबल सिखाता है तथा उनके दुख और मुसीबत में शामिल होता है। पौलुस एक प्रचारक और सेवक के रूप में लोगों के बीच कार्य करता था। उसने कभी भी किसी स्थान पर यह नहीं कहा कि मैं पास्टर पौलुस हूं या उसने अपने आपको एक व्यक्ति विशेष करके नहीं दिखाया। (रोमियों 15:16, 15:25)। एक प्रचारक पौलुस की तरह एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रचार करता है। (कुलु. 1:23, प्रेरितों 21:8, इफि. 4:11, 2 तीमु. 4:5)।

एक विशेष बात जो हम देखते हैं कि पौलुस पतरस और यूहन्ना अपने को सेवक के रूप में पेश करते थे। आज के युग में लोग पास्टर कहलाना बहुत पसंद करते हैं और यदि आप उन्हें ब्रदर सम्बोधित कर दे तो उन्हें अच्छा नहीं लगता। (रोमियों 1:1, 2 पतरस 1:1)। प्रेरित लोग अपने को सेवक कहलाने से शर्माते नहीं थे। एक प्रचारक कलीसिया का मुखिया भी नहीं है। वह कलीसिया का पोप भी नहीं है। केवल यीशु ही कलीसिया का मुखिया है। (कुलु. 1:18, इफि. 1:22, 23)। वह स्थानीय कलीसिया का बॉस भी नहीं है और न ही वह कलीसिया के ऊपर अपना अधिकार चलाता है।

भारतवर्ष में अधिकतर कलीसियाओं में केवल एक प्रचारक कलीसिया को अपनी इच्छा से चलाता है और वह इस तरह से व्यवहार दिखाता है कि सब कुछ मेरी इच्छा से चलेगा और जैसा मैं चाहूंगा वैसे ही सब करेंगे, परन्तु बाइबल की यह शिक्षा नहीं है। एक और बात जो अक्सर देखी जाती है कि प्रचारक अपने को प्रेरित या अर्पोस्टल और प्रोफ्रेट भी कहते है, यह भी अनुचित है। आज हमारे बीच में न अर्पोस्टल हैं और न ही प्रोफ्रेट हैं। एक अर्पोस्टल वो होता है जिसने यीशु को आमने-सामने देखा है। अथवा उसका गवाह जैसे यीशु के 12 चेले थे। (प्रेरितों 1:21-23)। बाइबल कहती है झूठे प्रेरित और प्रोफेट से सावधान रहें। (2 पतरस 2:1-4)।

एक प्रचारक रैवरण्ड भी नहीं है, क्योंकि यह शब्द केवल परमेश्वर के लिये इस्तेमाल हुआ है (भजन 111:9)। प्रचारक कोई धार्मिक गुरू भी नहीं है। और न ही वह फादर है। यीशु ने कहा था कि पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है जो स्वर्ग में है। यानि धार्मिक रूप से किसी को फादर या पिता न कहना। आजकल एक और बात देखने को मिल रही है कि कई स्त्रियां प्रचारक बनकर घूम रही हैं जबकि बाइबल कहती हैं कि स्त्री ऐसा न करे। (1 तिमोथी 2:11-12)। कई स्त्रियां अपने को रैवरण्ड कहलाना पसंद करती हैं और कई पास्टर कहलाती हैं। उन्हें पास्टर का शायद अर्थ नहीं पता। पास्टर बुजुर्ग पुरुष होते हैं, क्योंकि बाइबल में उनकी योग्यताओं में एक योग्यता है यानी उन्हें एक ही पत्नी के पति होना चाहिए। (1 तीमु. 3)। यह अच्छा है कि स्त्रियां फादर की पदवी नहीं रखती। फादर के अतिरिक्त उन्हें सारी पदवियां पसंद है। परमेश्वर के वचन के साथ कितना खिलवाड़ हो रहा है। यह एक शर्मनाक बात हैं।

मुझे दु:ख होता है कि किस प्रकार से लोग अनुचित शिक्षाओं से उछाले और घुमाएं जाते हैं प्रेरित पौलुस कहता है, ''हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ढंग विद्या और चतुराई से उन के भ्रम की युक्तियों की, और उपदेश की, हर एक बयार से उछाले और इधर-उधर घुमाएं जाते हैं।'' (इफि. 4:14)। आज कई लोग आपको अपनी अनुचित शिक्षाओं से भ्रमित कर रहे हैं। सावधान रहिये और सतर्क रहिए।

एक बार मैं दिल्ली के एक कब्रिस्तान में गया और वहां एक प्रचारक की कब्र पर उसकी सारी पदवियां लिखी हुई थी। अक्सर धार्मिक लीडर पदवियां बहुत पसंद करते हैं। मित्रो, आपकी धार्मिक पदवियां परमेश्वर के सामने कोई माइने नहीं रखती। वह सब उसकी दृष्टि में कूड़ा-कर्कट हैं। सब प्रचारकों को यह समझना चाहिए और यीशु ने भी कहा था कि मुझे उत्तम गुरू मत कह और उसने यह भी कहा था जो तुम में बड़ा होना चाहे वो तुम्हारा सेवक बने। (मत्ती 23:9-12)। हमारा परमेश्वर सबसे उत्तम हैं

बाइबल अनुसार प्रचारक एक साधारण व्यक्ति है। वह कलीसिया का मुखिया नहीं है। वह कोई बड़ा बिशप या चीफ पास्टर नहीं है। एक प्रचारक होते हुए मुझ पर हाय यदि मैं सुसमाचार प्रचार नहीं करता। (1 कुरि. 9:16)।

परमेश्वर कहाँ है?

सनी डेविड

इसमें कोई संदेह नहीं कि आज दुनिया में बहुत से ऐसे लोग भी हैं जो परमेश्वर में विश्वास नहीं करते है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर है ही नहीं। ओर यह भी सच है, कि बहुत से ऐसे लोग जो परमेश्वर में विश्वास नहीं करते हैं, और यहां तक कि वे लोग परमेश्वर का उपहास उड़ाते हैं, वे सांसारिक दृष्टिकोण से बड़े ही आगे भी बढ़ रहे हैं। यानि मेरा मतलब कहने का यह है, कि ऐसे लोग धन-सम्पत्ति और शक्ति और प्रभाव के दृष्टिकोण से संसार में बहुत ''बड़े लोग'' समझे जाते है। पर इसका अर्थ यह नहीं है, कि परमेश्वर है ही नहीं।

सबसे पहले तो हमें यह समझने की जरूरत है, कि जब हम संसार पर, आकाश और पृथ्वी पर दृष्टि डालते हैं तो हमें बनावट और सुन्दरता और जीवन दिखाई पड़ते हैं। ये सब चीजें कहां से और कैसे आ गई? जो कुछ हम आकाश में देखते हैं, और जमीन पर देखते हैं, क्या इन सब का कोई बनाने वाला नहीं है? जो लोग परमेश्वर में विश्वास नहीं रखते हैं, अर्थात, जो यह कहते हैं कि कोई परमेश्वर है ही नहीं; वे परमेश्वर का इंकार करके, यह साबित करना चाहते हैं, कि पृथ्वी पर सब प्राणी और पक्षी और पशु, सुन्दर फल और फल-दायक पेड़ और आकाश में चमकने वाले सूरज, चांद और सितारे अपने ही आप वुजूद में आ गए है। और ऐसा कहकर वे लोग स्वयं अपने आप को ही मूर्ख प्रमाणित कर रहे है। क्योंकि यदि मैं

आपसे कहूं कि आपका रेडियो, या आपका टेलीविजन, या आप का घर, या आपकी साईकिल या स्कूटर इनको किसी ने भी नहीं बनाया है, ये सब वस्तुएं अपने ही आप आ गई हैं या हो गई हैं, तो आप मेरे बारे में क्या सोचेंगे? बाइबल में एक जगह पर लिखा हुआ है, कि ''मूर्ख ने ही अपने मन में कहा है, कि कोई परमेश्वर है ही नहीं।'' (भजन. 14:1)।

लेकिन, परमेश्वर कहां है? कुछ लोग कहते हैं, कि परमेश्वर तो सब जगह है। पर यह सच नहीं है। क्योंकि परमेश्वर वहां नहीं है, जहां पाप है। परमेश्वर वहां नहीं हैं, जहां लड़ाई-झगड़े बुरे काम हैं। परमेश्वर जुएखानों में नहीं है। परमेश्वर शराबखानों में नहीं है। जहां बुरे काम होते हैं, वहां परमेश्वर नहीं है। जो लोग परमेश्वर की इच्छानुसार अपने जीवन को नहीं बिताते, परमेश्वर उनके भीतर नहीं है। जहां परमेश्वर की आराधना और उपासना उसकी इच्छानुसार नहीं की जाती, परमेश्वर वहां नहीं है। हां, परमेश्वर के होने का प्रमाण तो सब जगह है, लेकिन परमेश्वर सब जगह नहीं है।

इसी तरह से कुछ लोग यह कहते हैं, कि जो कुछ भी जगत में होता है, वह सब परमेश्वर की ही मर्जी से होता है। वे कहते हैं कि उसकी मर्जी के बिना तो एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। अब, यदि यह बात सच होती, जो आज इस समय पृथ्वी पर जहां कहीं भी अपराध और बुरे काम हो रहे हैं, जहां लड़ाई-झगड़े और लूट-पाट हो रही है, तो यह सब कुछ परमेश्वर की ही इच्छा से हो रहा है। अब कौन व्यक्ति इस बात को मानने को तैयार है? पर वास्तव में बात तो यह है, कि जबकि परमेश्वर के होने के प्रमाण तो हर एक जगह पर विद्यमान हैं, पर स्वयं परमेश्वर हर एक जगह विद्यमान नहीं है। क्योंकि परमेश्वर पाप और अधर्म में नहीं है। परमेश्वर बुरे और गलत कामों में नहीं है। परमेश्वर अज्ञानता और अंधकार के कामों में नहीं है। जहां लोग परमेश्वर की इच्छानुसार नहीं चल रहे हैं, वहां परमेश्वर नहीं है। जहां उसकी आराधना उपासना उसकी इच्छा के अनुसार नहीं होती, वहां परमेश्वर नहीं है।

तो फिर परमेश्वर कहां है? परमेश्वर हर एक उस जगह है, जहां पर लोग उसकी इच्छा के अनुसार चल रहे हैं। जहां लोग उसकी बातों को सुनते हैं, और उसकी बातों पर विश्वास करते हैं और उसके बताए हुए मार्ग पर चलते हैं। जहां लोग परमेश्वर की आराधना उपासना उसकी इच्छा के अनुसार करते हैं, और अपना जीवन उसकी इच्छा पर चलकर व्यतीत करते हैं, परमेश्वर वहां है। वास्तव में बात यह है कि परमेश्वर ने अपने आप को मनुष्य पर अपनी इच्छा के द्वारा प्रकट किया है। जबकि पृथ्वी पर और आकाश में सभी वस्तुएं इस बात का प्रमाण हैं कि परमेश्वर है, क्योंकि यदि परमेश्वर इन सब चीजों को नहीं बनाता, तो ये सब वस्तुएं कहां से आती? परन्तु परमेश्वर स्वयं उन वस्तुओं के भीतर नहीं रहता। किन्तु जहां उसकी इच्छा को माना जाता है; जहां लोग उसका भय मानते हैं, और उसकी आज्ञानुसार चलते हैं, वहां परमेश्वर अपनी इच्छा और वचन के द्वारा मौजूद रहता है।

पर हम कैसे जान सकते हैं, कि परमेश्वर की इच्छा क्या है? वह हम से क्या चाहता है? परमेश्वर ने अपने आपको, अपने मन को, और अपनी मर्जी और इच्छा को सब मनुष्यों पर सब जगह पर केवल एक ही तरह से प्रकट किया है। जिस प्रकार का एक ही परमेश्वर है, उसी तरह से उसकी सब मनुष्यों के लिए केवल एक ही

इच्छा है। और उसी एक परमेश्वर ने अपने आपको और अपनी इच्छा को अपनी एक पुस्तक के द्वारा सब लोगों पर प्रदर्शित किया है- और उस पुस्तक का नाम है ''बाइबल''।

बाइबल हमें बताती है, कि हमारा परमेश्वर आत्मा है (यूहन्ना 4524)। उसी परमेश्वर, महान और सर्वशक्तिमान ने हमें बनाया है। वह परमेश्वर हम सब से बहुत प्रेम करता है। और इस बात का प्रमाण इस बात में मौजूद है, कि वह पाप से जगत का उद्धार करने के लिये स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आ गया था। स्वर्ग वह आत्मिक स्थान है, जहां कोई भी पाप नहीं है। लेकिन जमीन पर पाप हर एक स्थान पर विद्यमान है। जबकि हमारा परमेश्वर चाहता है, कि हम सब पृथ्वी पर के अपने जीवन को पूरा करके स्वर्ग में उसके पास जाकर हमेशा के लिये रहे। लेकिन मनुष्य के भीतर पाप होने के कारण ऐसा संभव नहीं हो सकता। और इसीलिये परमेश्वर स्वयं स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आ गया था। और उसने सारे जगत के पापों को अपने ऊपर लेकर अपने आप को सारी मानवता के पापों के बदले में एक सिद्ध बलिदान के रूप में दे दिया था। सो हमारा परमेश्वर स्वयं ही हम सब के पापों का प्रायश्चित है।

परमेश्वर की पुस्तक बाइबल में लिखा है, कि ''यदि कोई मसीह में है तो वह एक नई सृष्टि है; और सब बातें परमेश्वर की ओर से है, जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया..... अर्थात्, परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया, और उन के अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया'' इसीलिये, बाइबल का लेखक आगे कहता है कि, हम परमेश्वर की ओर से निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर लो। क्योंकि, जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाए। (2 कुरिन्थियों 5:17-21)।

सो, जबकि पाप के कारण प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर से दूर और अलग है। दूसरी ओर, परमेश्वर ने हर एक इंसान को यह अवसर दिया है कि वह उसके पुत्र, यीशु मसीह के द्वारा, जगत के पापों का प्रायश्चित है, फिर से अपना संबंध परमेश्वर के साथ स्थापित कर ले। सो इस प्रकार, परमेश्वर हम में से किसी से भी दूर नहीं है। परमेश्वर ने यह संभव कर दिया है कि हम उसके पास आकर उसकी संगति में रह सकते है। परमेश्वर और मनुष्य के बीच केवल पाप का अन्तर है। और वह पाप का अन्तर उस समय मिट जाता है, जब कोई व्यक्ति मसीह यीशु में यह विश्वास लाता है कि मसीह मेरे पापों का प्रायश्चित है, और पाप से अपना मन फिराकर पाप के लिये मर जाता है, और जल की समाधी के भीतर गाड़े जाकर बपतिस्मा लेता है। इस प्रकार, हर एक इंसान पाप से छुटकारा पाकर मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ अपना मेल कर सकता है। पर जब हम पाप से मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं तो हमारी संगति परमेश्वर के साथ हो जाती है।

क्या आप परमेश्वर के साथ है? या परमेश्वर से अलग हैं? याद रखें, कि प्रभु यीशु मसीह में होकर हम परमेश्वर के पास आ जाते हैं।

मनुष्य को परमेश्वर की आवश्यकता है

जे.सी. चोट

मैं एक मसीही हूँ और चर्च ऑफ क्राईस्ट का सदस्य हूँ। मैं आपको यह इसलिये बता रहा हूं ताकि आप जाने कि मैं कौन हूं। इसे पाठ में मैं आपको बताना चाहूंगा कि मनुष्य को या मेरे को और आपको परमेश्वर की आवश्यकता क्यों है? परमेश्वर हमारा बनाने वाला हैं जिसने इसकी रचना की है।

उत्पत्ति की पुस्तक के पहले अध्याय में लिखा है, ''आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की'' (उत्पत्ति 1:1)। और फिर 27 पद में लिखा है, ''तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया।''

यहां हम देखते हैं कि पहिले स्त्री-पुरुष को परमेश्वर ने आश्चर्यक्रम करके बनाया था। यानि परमेश्वर ने मिट्टी से आदम की रचना की थी। परन्तु अब प्राकृति के नियम द्वारा मनुष्य की उत्पत्ति होती है। आज जो भी वस्तु उत्पन्न होती है वो प्राकृति के नियम द्वारा होती है।

राजा दाऊद ने परमेश्वर की सृष्टि के विषय में कहा था, ''आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है, और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है। दिन से दिन बातें करता है और रात को रात ज्ञान सिखाती है, न तो कोई बोली है, और न कोई बोली है और न कोई भाषा जहां उनका शब्द सुनाई नहीं देता है।'' (भजन 19:1-5)।

सृष्टि की रचना में मनुष्य ही ऐसी रचना है जो परमेश्वर की आज्ञा के विरूद्ध जाता है। परन्तु मनुष्य को परमेश्वर की आवश्यकता है। मनुष्य को उसने अपने स्वरूप पर बनाया है, इसलिये मनुष्य बिल्कुल फरक है। मनुष्य शारीरिक तो है, परन्तु वह आत्मिक भी है। मनुष्य को परमेश्वर ने आत्मा दी है, जब शरीर नाश हो जाता है, तब आत्मा परमेश्वर के पास लौट जाती है। (सभो. 12:7)। तथा आत्मा कभी नहीं मरेगी। बुद्धिमान लोग परमेश्वर को जानते हैं और पहिचानते है परन्तु मूर्ख लोग कहते हैं कि कोई परमेश्वर नहीं है। (भजन 14:1)।

मनुष्य में बुद्धि है। वह विचार कर सकता है, अपने जीवन के फैसले ले सकता है। कई बार मनुष्य घमण्ड से भर जाता है। और घमण्ड से भरा हुआ इंसान परमेश्वर को नकार देता है। मनुष्य को यह समझना चाहिए कि वह परमेश्वर की दृष्टि में कुछ भी नहीं है। मनुष्य पापी है। वह खोया हुआ है। उसे अपने पापों से मुक्ति की आवश्यकता है। और केवल परमेश्वर है जो उसको मुक्ति दिला सकता हैं

जब मनुष्य इस जगत में जन्म लेता है तो वह निष्पाप होता है। हम अपने माता-पिता से पापों को नहीं लेते। और न ही आदम के पाप द्वारा पापी ठहराये जाते हैं। यहेजकेल भविष्यदूक्ता ने कहा था जो आत्मा पाप करेगी वह नाश होगी। पुत्र पिता

के पाप द्वारा पापी नहीं ठहरेगा। वह कहता है, ''जो प्राणी पाप करे वहीं मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा और न पिता पुत्र का, धर्मी को अपने ही धर्म का फल, और दुष्ट को अपनी ही दुष्टता का फल मिलेगा।'' (यहेजकेल 18:20)।

जब एक बालक बड़ा होकर समझदार हो जाता है और भले बुरे का ज्ञान समझ लेता है तब वह पापी बन जाता है। अर्थात वह जाने अंजाने में गलतियां करता है और पापी बन जाता है। सारे मनुष्य पापी है, और परमेश्वर की महिमा से रहित है। (रोमियों 3:23)। यदि हम अपने पापों में ही मर जाएं तो अनन्तकाल के दण्ड से नहीं बच पाएंगे इसलिये जब तक हम पृथ्वी पर हैं हम बुराई से मन फिराकर उसकी आज्ञा को मान सकते हैं। परमेश्वर अपने अनुग्रह और दया से हमें पापों से बचा सकता है। प्रेरित पौलुस कहता है, जब हम पापी ही थे प्रभु यीशु ठीक समय पर हमारे पापों के लिये मरा। (रोमियों 5:8)।

इस सबसे हम यह देखते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्य को निष्पाप बनाया था, पाप करके मनुष्य ने अपने और परमेश्वर के बीच एक दिवार खड़ी कर ली। परमेश्वर ने मनुष्य को पाप से बचाने के लिये अपने पुत्र यीशु को भेजा ताकि वह हमारे पापों के बदले क्रूस पर अपना बलिदान दे। जब हम उसमें विश्वास लाकर और अपना मन बुराई से फेरकर बपतिस्मा लेते हैं तब वह हमारा उद्धार करता है। (मरकुस 16:16–प्रेरितों 2:38)। जब हम ऐसा करते हैं तब परमेश्वर हमें हमारे पापों से उद्धार देता है तथा यीशु की कलीसिया में मिला देता है (प्रेरितों 2:47)।

क्या आप परमेश्वर में विश्वास करते हैं? क्या आप यह विश्वास करते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है? यदि नहीं तो आज ही इस पर विचार कीजिये। कई लोग ऐसा कहते हैं कि लोग आदम के पाप से पापी है परन्तु यह गलत शिक्षा है। कई दाउद का उदाहरण देते हैं भजन 51 से जहां वह कहता है, ''देख, मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ, और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा।'' यहां हम देखते हैं कि पापी कौन है? दाउद या उसकी माता? दाउद तो अभी पैदा भी नहीं हुआ था। पापी उसकी माता थी जो भला बुरा जानती थी। दाउद छोटा बच्चा एक पापी नहीं था। उसमें आदम का पाप नहीं था।

घर में शान्ति (गलातियों 5:22, 23)

कोय रोपर

पवित्र आत्मा के फल की तीसरी खूबी शान्ति है। हम शान्ति की आवश्यकता को समझते हैं क्योंकि हम युद्ध की वास्तविकता को जानते हैं, मध्यपूर्व में युद्ध, पूर्वी यूरोप और अफ्रीका में ग्रह और कबीलाई युद्ध, ''वियतनाम और कोरिया के युद्ध और विश्वयुद्ध हम देखे हैं।'' वास्तव में मानवीय इतिहास में शान्ति से अधिक युद्ध के वर्ष होंगे। मनुष्य जाति की सामान्य स्थिति ''लड़ाइयां और लड़ाइयों की चर्चा सुनना है (मत्ती 24:6)। संसारभर में हम शान्ति के लिए प्रार्थना करते और शानित की उम्मीद रखते हैं।

हमारे व्यक्तिगत जीवनों के लिए शायद इससे भी अर्थ भरा यह तथ्य है कि हमारे आस-पास आमतौर पर बहुत शान्तिमय नहीं होता। राजनैतिक लड़ाइयां यानी शब्दों और विचारों के युद्ध अन्तर्राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर पर लड़े जा रहे हैं। जहां हम काम करते हैं। वहां झगड़ा मिल सकता है। समाज किसी मुद्दे पर बंटा हो सकता है। कई बार कलीसिया में फुट पाई जाती है। घर में भी झगड़ा हो सकता है।

हम इतना झगड़ा देखते हैं कि कई बार हैरान होते हैं कि क्या हम कभी शांति पा सकते हैं? शांति परमेश्वर की सामर्थ का परिणाम है। हमारी दिलचस्पी मुख्यतया इस बात में है कि हम सफल घरों को कैसे पा सकते हैं, इस कारण हमें यह समझने की आवश्यकता है कि घर में शान्ति लाने वाला परमेश्वर ही है।

शान्ति नये नियम का व्यापक विषय हैं-

- **परमेश्वर शान्ति का दाता है,** जैसा कि प्रेरितों ने यह प्रार्थना करते हुए समझ लिया कि परमेश्वर उनके सुनने वालों और पाठकों को शान्ति दे सकता है, या यह कहकर उन्हें सलाम करते हुए, हमारे पिता परमेश्वर की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे (रोमियों 1-7)।
- **परमेश्वर 'शान्ति का परमेश्वर' है** (रोमियों 15:33, फिलिप्पियों 4:9, 1 थिस्सलुनीकियों 5:23, इब्रानियों 13:20, देखें 2 थिस्सलुनीकियों 3:16)।
- जब यीशु आया तो अपने साथ शान्ति का संदेश लाया था (लूका 2:14)।
- **यीशु शान्ति देता है** (यूहन्ना 14:27, 16:33)।
- **यीशु हमारी शान्ति है** (इफिसियों 2514)।
- शान्ति मसीही व्यक्ति के जीवन में पवित्र आत्मा के फल का एक भाग है (गलातियों 5:22)।

बाइबल के तथ्यों को यह सूची शान्ति की यदि कोई बात बताती है तो वह यह है कि शांति परमेश्वर की ओर से ही मिलती है। हम इसे कई प्रकार से व्यक्त कर सकते हैं, ''शांति परमेश्वर की ओर से मिलती है', शान्ति पवित्र आत्मा की ओर से मिलती है, 'शान्ति उद्धार पाने से मिलती है।' हम शान्ति को जो भी नाम दें पर यह हमारी अपनी सामर्थ से या हमारी अपनी बुद्धि के द्वारा नहीं मिल सकती। सच्ची शान्ति का देने वाला केवल परमेश्वर है यानी हमारे संसार में, हमारे जीवनों में और हमारे घर में कहीं भी, कभी भी परमेश्वर ही शान्ति देता है।

फिर एक सवाल उठता है कि परमेश्वर घर में शान्ति कैसे देता है? वह तीन तरह से शान्ति देता है।

मनुष्य और परमेश्वर के बीच शान्ति

पहले तो परमेश्वर मनुष्य और परमेश्वर के बीच शान्ति देता है। रोमियों 5:1 कहता है, सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरें तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल (शान्ति) रखें। यह आयत इस बात को मानती है कि हमने अपने आपको परमेश्वर से अलग किया हुआ है। जब हम पाप करते हैं, तो हम परमेश्वर के शत्रु बन जाते है, यानी उसके क्रोध के अधीन आ जाते हैं। परन्तु उसने मसीह के बलिदान के द्वारा और हमें मसीह को स्वीकार करने के द्वारा अपने और

हमारे बीच शांति के लिए उपाय किया है। जब हम विश्वास और आज्ञापालन में उसकी बात मानते हैं तो हमारी परमेश्वर के साथ कोई लड़ाई नहीं रहती बल्कि हमारी उसके साथ सुलह हो जाती है।

परमेश्वर के साथ शांति या मेल में रहना घर को कैसे प्रभावित करता है? यदि हम खुशहाल घर चाहते हैं तो हमें पहले मसीही बनना चाहिए और फिर मसीही लोगों के रूप में व्यवहार करना चाहिए। तब दूसरों के साथ शांति हो जाएगी। 1 यूहन्ना 1:7 में हम पढ़ते हैं, ''पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक-दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है। यह आयत जो मसीही लोगों से बात करती है, इसमें एक शर्त और दो परिणाम है। शर्त ज्योति में चलना या परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए अपना जोर लगाना है। पहला परिणाम तो क्षमा है, क्योंकि यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है। दूसरा परिणाम एक-दूसरे से सहभागिता है। हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता परमेश्वर के साथ सही ढंग से जुड़ना है। जब हम जुड़ जाते हैं यानी हम अपने पापों से शुद्ध हो जाते है तो मनुष्य के साथ भी हमारा संबंध सही हो जाएगा। हमारी अन्य संबंधो के साथ-साथ अपने परिवारों में भी एक-दूसरे के साथ अच्छी सहभागिता हो जाएगी।

मनुष्य के अन्दर शान्ति

परमेश्वर हर व्यक्ति के अन्दर भी शान्ति देता है। हम कह सकते हैं कि परमेश्वर मनुष्य और अपने बीच शांति देता है। हम सब अपने अन्दर एक प्रकार का गृहयुद्ध लड़ते हैं जिसमें हमारा एक भाग एक चीज चाहता है, जबकि दूसरा भाग कुछ और चाहता है। परमेश्वर इस गृहयुद्ध से यानी झगड़ों को समझाने के लिए यानी जो हमें फाड़ डालने का खतरा है, हमें शान्ति देने के योग्य है। हमें भीतरी शान्ति की प्रतिज्ञा मिली है। यीशु ने अपने चेलों को शान्ति देने का कायदा किया। उसने कहा, मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं, जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता, तुम्हारा मन न घबराए और न डरे' (यूहन्ना 14:27, 16:33 भी देखें)। पौलुस ने लिखा-

किसी भी बात की चिंता मत करो, परन्तु हर बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं। तब परमेश्वर की शान्ति जो समझ के बिल्कुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी (फिलिप्पियों 4:6, 7)।

खुशहाल घर के लिए पहली शर्त परमेश्वर के साथ शान्ति है, मन में शांति दूसरी शर्त है। बहुत बार झगड़े से टूटे हुए घर में समस्या संबंध की नहीं, बल्कि व्यक्तिगत समस्या होती है। परिवार के एक या अधिक लोग भीतरी झगड़ों से, या हीन भावना या दोष या कमी से, स्वआत्मशीलता या आत्मघृणा से, निराशाओं या बार-बार की नाकामियों से टूट सकते हैं। वे परिवार के हर व्यक्ति पर अपना गुस्सा वैसे ही उतारते हैं जैसे कोई व्यक्ति अपने नियोक्ता पर पागल हो जाए और अपने गुस्से को अपने कुत्ते पर उतारे।

परमेश्वर की शांति, जो सारी समझ से परे है ऐसी व्यक्तिगत समस्याओं के सुलझाने में कैसे सहायता कर सकती है? मन की शांति जिसे मसीही लोग जानते हैं वह हर प्रकार के झगड़े को मिटाकर यह गारंटी नहीं देती कि हम कभी परेशान या दुखी नहीं हुए। परन्तु यह एक ऐसा लंगर दे देती है जो हमें बिना पलटे जीवन के तूफ़ानों का सामना करने के योग्य बनाता है। यह शान्ति हमें अपनी समस्याओं के कारण दूसरों को दुखी किए बिना जीवन में आने वाली कई परेशानियों को सहने में सहायता करती है।

परमेश्वर की शान्ति हमें अपने भीतरी झगड़ों को निपटाने में कैसे सहायता कर सकती है? हर व्यक्तिगत समस्या का परमेश्वर के पास उत्तर है। कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

दोष, कई बार लोग चिड़चिड़े घबराए हुए या परेशान क्यों लगते हैं? आमतौर पर यह दोष की समस्या के कारण होता है। क्षमा करने के द्वारा परमेश्वर के पास हर समस्या का समाधान है। यदि हम प्रभु के निर्देश के अनुसार उसकी ओर मुड़ते हैं, तो वह हमें क्षमा कर देगा। फिर हमें दोष के बोझ को सहने की कोई आवश्यकता नहीं है।

अप्रिय महसूस करना, कइयों के लिए अप्रिय लगना समस्या हैं। परमेश्वर के पास अप्रिय लगने की समस्या का उत्तर हैं कि वह हम से प्रेम करता है (यूहन्ना 3:16)। वह हमसे हमारी कल्पना से कहीं आगे बढ़कर प्रेम करता है। कोई हम से प्रेम करे या न, परमेश्वर हम से प्रेम करता है।

हीन भावना, यह एक और आम समस्या हीन भावना या बेकार समझे जाना है। परमेश्वर के पास हीन भावना का उत्तर है। वास्तव में उसके पास दो उत्तर हैं। पहले तो वह हमें बताना चाहता है कि हम उसकी दृष्टि में बेकार नहीं है, हम इतने मूल्यवान हैं कि उसने हमारे लिए मरने को अपना इकलौता पुत्र दे दिया (रोमियों 5:8)। दूसरा वह हमें बताता है कि हम हर आवश्यकता की बात उसकी सहायता से कर सकते हैं (फिलिप्पियों 4:13, इफिसियों 3:20, 21)।

असफलता, हम में से कई लोग बार-बार की असफलताओं की समस्या से दुखी हैं। हम ने जो कुछ पाने की कोशिश की उसमें हम परेशान हो जाते हैं। शायद हम ने जीवन के हर क्षेत्र में बार-बार निराशा देखी थी। जीवन की निराशाओं का परमेश्वर के पास उत्तर है। वह एक सही दृष्टिकोण यानी वह दृष्टिकोण देता है जो अनन्तकाल के दृष्टिकोण से देखता है कि हमारी अधिकतर निराशाएं अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। महत्व इस बात का है कि हमारा उद्धार हो रहा है और हम स्वर्ग में जा रहे हैं। इस जीवन में असफलताओं के बावजूद में हमें उद्धार का आश्वासन कर सकता है।

मसीही लोगों के रूप में जब हम अपने आपको दयनीय समझते हैं और दूसरों के लिए जीवन को तरसयोग्य बनाने के प्रलोभन में पड़ते हैं तो यह इसलिए नहीं है कि मसीह हमारी सहायता नहीं कर सकता। इसके विपरीत यह इस कारण है कि हमने उन संसाधनों को नजर अंदाज कर दिया है जो मसीह हमारे लिए देता है। यदि हम सचमुच उस पर विश्वास करते हैं जो बाइबल बताती है और उन शिक्षाओं को

अपनाते हैं, तो हम अपने आप में शांति महसूस करेंगे, परमेश्वर की शांति।

इसलिए अच्छी खबर यह है कि हमें अपने साथ लड़ाई करने की आवश्यकता नहीं। प्रभु की और मुड़ कर और अपना लगाव उसी की ओर लगाकर मसीही के रूप में हम शांति पा सकते है। वह हमारी कमियों की पूर्ति कर सकता है और हमारे झगड़े निपट सकते हैं। अविभाजित मनों के साथ हम सचमुच में शांति से, न केवल परमेश्वर के साथ, बल्कि अपने आप के साथ भी रह सकते है। हमारी भीतरी शांति के सबसे बड़े लाभपात्रों में हमारे परिवार होंगे।

उद्धार की योजना

जेम्स ई. प्रीस्ट

परमेश्वर की ओर से भेजे गए स्वर्गदूत ने यूसुफ को बताया था कि कुंवारी मरियम एक बालक को जन्म देगी, क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा (मत्ती 1:20ख, 21)। इस प्रकार यशायाह की भविष्यवाणी परोक्ष रूप में पूरी हुई, कि देखो एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा जिसका अर्थ यह है परमेश्वर हमारे साथ (मत्ती 1:22, 23, यशायाह 7:14)। संसार में यीशु का जन्म आश्चर्यकर्म से हुआ था और उसे परमेश्वर के रूप में स्पष्ट मान्यता मिलनी थी। जैसा कि हम कह चुके हैं, उस समय मरियम ने बहुत सी बातें अपने मन में रखीं थी।

यदि हम इस सब को उतनी ही गंभीरता से लें जितनी गंभीरता से इसे हमारे सामने प्रस्तुत किया गया है तो हम जान जाएंगे कि यह कितनी बड़ी बात है। संसार का इतिहास अपनी दिशा बदल रहा था। समय बदल रहे थे। एक नया और शानदार युग आने वाला था। मात्र मनुष्य के लिए ऐसी महत्वपूर्ण घटनाओं का संबंध बनाना कठिन है। यह कोई कम आश्चर्य की बात नहीं है कि इतिहास में यीशु के प्रवेश के लिए ईश्वरीय व्याख्या की आवश्यकता थी। इसकी समझ चाहे धीरे-धीरे ही आई। आखिर, यीशु के पृथ्वी पर अपने महान कार्य के लिए आने के समय उसके पहचानने का संघर्ष करने वाले लोगों को हमारी तरह इन अद्‌भुत सच्चाईयों को परखने के लिए मत्ती मरकुस, लूका और यूहन्ना के द्वारा लिखी सुसमाचार की पुस्तक पढ़ने का सौभाग्य नहीं मिला था।

परन्तु, हम पढ़ सकते हैं कि पिता अपने पुत्र के सच्चे स्वभाव को प्रकट करने पर अटल था। उदाहरण के लिए नतनएल के शब्दों में यीशु के बारे में बताने में सच्चाई है- हे रब्बी तू परमेश्वर का पुत्र है, तू इस्राएल का महाराजा है (यूहन्ना 1:49)। यीशु ने उसकी निष्कपटता की सराहना की, परन्तु क्या उसके शब्दों में समयों की यहूदी मानसिकता की पुरानी राष्ट्रीयता की गंध नहीं है? क्या नतनएल ऐसे प्रभावों से मुक्त था?

यहूदी लोग एक राष्ट्रीय जागृति और एक राजा की शानदार प्रतीक्षा में थे जिसे

वे परमेश्वर के अभिषिक्त चुने हुए पुत्र के रूप में देख सके, जैसे दाऊद और सुलैमान के शासन के दौरान उनके पूर्वज आनन्दित थे। यहूदी लोग यीशु को राजा के रूप में देखना चाहते थे (यूहन्ना 6:15)।

एक अवसर पर मृत्यु पर यीशु की सामर्थ से उसके देखने वालों पर एक शानदार प्रभाव पड़ा। वे कहने लगे कि हमारे बीच में एक बड़ा भविष्यवक्ता उठा है, और परमेश्वर ने अपने लोगों पर कृपा दृष्टि की है (लूका 7:16)। उनके भयभीत हो जाने से यह एक बहुत बड़ी घोषणा थी, परन्तु क्या इस प्रशंसा से उन्होंने यीशु को परमेश्वर के रूप में माना? हमें याद रखना होगा कि इस्राएलियों ने परमेश्वर के स्वयं देहधारी हुए बिना, परमेश्वर को उसकी बातों या उसके कामों से अपने बीच में देखा था। जब यीशु ने अपनी ईश्वरीयता की साफ पुष्टि की, तो धार्मिक अगुओं की ओर से इसे बेतुका मानकर उसका अपमान और सताव दिया गया (8:42-59)।

एक समझदार व्यक्ति, निकुदेमुस ने निश्चय ही यह कहकर यीशु की प्रशंसा की, हे रब्बी, हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है, क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता (यूहन्ना 3:2)। एक शिक्षक का दूसरे शिक्षक के रूप में निकुदेमुस ने यीशु द्वारा दिखाए चिन्हों में परमेश्वर की सामर्थ और आशीष का प्रमाण देखा। क्या निकुदेमुस को कुछ और भी दिखाई दिया? पता नहीं। परन्तु, हम जानते हैं कि परमेश्वर अपने पुत्र के सचचे स्वभाव को प्रकट करने की तैयारी कर रहा था। परमेश्वर का विकासशील प्रकाशन आगे बढ़ता रहा।

यीशु के प्रश्न के उत्तर में, पतरस ने एक उल्लेखनीय अंगीकार किया तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है (मत्ती 16:16)। क्या यह अंगीकार उनसे महत्वपूर्ण था जिनका उल्लेख पहले किया गया था? हम जानते हैं कि यह अंगीकार निर्णायक था। पहली बात कि यह यीशु के प्रश्न का सीधा उत्तर था। दूसरा, हमें बताया गया है कि पतरस यह अंगीकार इसलिए कर पाया क्योंकि यह यीशु के स्वर्गीय पिता की ओर से एक प्रकाशन था (मत्ती 16:17)। यीशु के सम्पूर्ण परिचय का सत्य इस अंगीकार में अंतर्निहित था।

इसे मानने के हमारे पास कुछ कारण हैं कि पतरस इस अंगीकार के पूर्ण अर्थ से स्वयं भी अनभिज्ञ था। इस अंगीकार के थोड़ी देर बाद हम पाते हैं कि वह यीशु को अपनी मृत्यु, और दुख सहने की बात करने पर डांट रहा है। (मत्ती 16:21-23)। हम यह भी जानते हैं कि पतरस के लिए वक्तव्य देना जिसकी उसे समझ नहीं होती थी, चाहे आत्मा की प्रेरणा से हो कोई नई बात नहीं थी (प्रेरितों 2:39, 10:28-34)। हम जानते हैं कि पतरस उत्तेजक होकर जल्दबाजी में बोल देता था (मत्ती 17:4, 5, मरकुस 9:5, 6, लूका 9:33)। अपने प्रभु के प्रति पूर्ण वफादारी के समय भी पतरस मन को छू लेने वाली ऐसी बात कह पाया था जिस पर दबाव पड़ने पर वह स्थिर न रहा था (मत्ती 26:33-35, 69-75)। इसलिए हम निष्कर्ष निकालते हैं कि हो सकता है कि पतरस ने अपने प्रशंसनीय और सच्चे अंगीकार के पूरे महत्व को न समझा हो कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।

हमें यह जानकर आश्चर्य नहीं करना चाहिए कि यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान तक किसी मनुष्य के होंठों से उसे इमानुएल नहीं कहा गया था। कितने

आश्चर्य की बात है कि हिला देने वाली यह सच्चाई उसी व्यक्ति के मुख से निकली थी जो पहले संदेह करता था। थोमा ने यीशु की सामर्थ देखी थी। उसने उसकी अद्वितीय शिक्षाएं सुनी थी। उसे उसके सिद्ध, धर्मी जीवन को देखने का सौभाग्य प्राप्त था। उसने निराशा में डूबे लोगों के प्रति उसकी गहरी दया देखी थी। शायद उसने यीशु को अपने बारे में यह कहते हुए भी सुना था कि मैं हूं (यूहन्ना 8:58)।

संभव है कि थोमा के मन में यह सब उस समय आया जब वह जी उठे यीशु के सामने खड़ा था। जो कुछ उसने देखा वह किसी वक्तव्य में, शिक्षा या प्रस्ताव पर विचार नहीं था। उसने यीशु के देह में क्रूस के दाग देखे थे। वह जानता था कि वह पुनरुत्थान को देख रहा है और वह यह भी जानता था कि परमेश्वर को छोड़ किसी और के पास मृत्यु पर विजय पाने की शक्ति नहीं है। इसीलिए थोमा ने उत्तर दिया, हे मेरे प्रभु हे मेरे परमेश्वर (यूहन्ना 20:28)।

अन्त में परमेश्वर ने, जो आत्मिक पिता है, यह सब स्पष्ट कर दिया है। यीशु नासरी उसका आत्मिक पुत्र अर्थात देह में ईश्वर है।

प्रार्थना में रूकावटें

जॉन स्टेसी

इस बात को ध्यान में रखते हुए कि पौलुस प्रेरितों 17:25 में कहता है कि वह तो आप ही सब को जीवन और श्वांस और सब कुछ देता है, प्रत्यक्ष ही है कि मनुष्य परमेश्वर के साथ अपना संबंध रखना चाहता है। किसी कवि ने कहा है कि प्रार्थना के द्वारा ऐसे-ऐसे काम हो जाते हैं जिनकी संसार कल्पना भी नहीं कर सकता। यदि यह सच है, कुछ लोग कहते हैं, तो फिर परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को क्यों नहीं सुनता? इसका कारण यह है कि हमारी प्रार्थनाओं में कुछ रूकावटें होती हैं। लेकिन मैं यह भी यहां कहना चाहूंगा कि इस प्रकार के सभी कारणों के लिये मनुष्य स्वयं जिम्मेदार है। ऐसे ही कुछ कारणों के ऊपर इस समय हम विचार करेंगे।

सबसे पहला कारण है **परमेश्वर से न मांगना**। याकूब 4:2 में लिखा है कि तुम्हें इसलिये नहीं मिलता क्योंकि तुम मांगते नहीं। परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं ऐसे चेक की तरह हैं जिन्हें इस्तेमाल में न लाया गया हो। यदि चेक लेकर उन्हें बैंक में न दिया जाए, तो ऐसे चेक निरे कागज के टुकड़े सिद्ध होंगे। कितने अफसोस की बात है, कि बहुतेरे लोगों ने अपने आप को अनेकों महत्वपूर्ण आशीषों से केवल इसीलिए परे रखा हुआ है क्योंकि वे परमेश्वर के पास जाकर उससे मांगते नहीं है। इस बात को समझने की बड़ी ही आवश्यकता है कि ऐसी समस्याएं हैं जिनका समाधान केवल प्रार्थना में ही मिल सकता हैं

दूसरे, प्रार्थना में रूकावट का कारण होता है, **संदेह करना।** याकूब की पुस्तक के पहले अध्याय के आरंभ में बुद्धि के विषय में लिखा गया है। वहां 5 तथा 6 पदों में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे परन्तु विश्वास से मांगे, और संदेह न करे, मत्ती 21:22 में यीशु ने

कहा था, और जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास से मांगोगे वह सब तुम को मिलेगा। सो हम बाइबल के इन पदों से यह शिक्षा पाते हैं कि संदेह के साथ की गई प्रार्थना परमेश्वर स्वीकार नहीं करता, पर हमें विश्वास के साथ प्रार्थना करनी चाहिए। बहुतेरे लोग उस स्त्री की तरह हैं जिसने एक रात प्रभु से प्रार्थना करके कहा था, कि वह उसके आंगन में लगा पेड़ वहां से हटा दें। किन्तु जब दूसरे दिन सुबह वह उठी तो उसने कहा, देखो वह पेड़ तो वहीं का वहीं है, कहा नहीं था मैंने कि ऐसा तो हो ही नहीं सकता।

तीसरे **पति-पत्नी के संबंध** यदि ठीक न हों तो उससे भी प्रार्थना में बाधा पड़ सकती है। 1 पतरस 3:7 में लिखा है, वैसे ही हे पतियों, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो, और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों ही जीवन के वरदान के वारिस हैं, जिस से तुम्हारी प्रार्थनाएं रूक न जाएं। हम एक दूसरे के प्रति परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध व्यवहार करके यह आशा नहीं रख सकते कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुन लेगा।

चौथे, यदि हमारे **जीवनों में पाप है** तौभी हमारी प्रार्थनाएं नहीं सुनी जाएंगी। नीतिवचन 28:9 में लिखा है कि, जो अपना कान व्यवस्था सुनने से फेर लेता है, उसकी प्रार्थना घृणित ठहरती है। और 1 पतरस 3:12 के अनुसार प्रभु की आंखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान उनकी बिनती की ओर लगे रहते हैं, परन्तु प्रभु बुराई करने वालों के विमुख रहता है।

पांचवीं और अंतिम बात इस संबंध में हम यह देखते हैं कि कुछ ऐसी वस्तुएं हैं, जो केवल प्रार्थना करने से ही पूरी नहीं हो सकती। यदि हम स्वयं बाइबल का अध्ययन नहीं करते हैं तो परमेश्वर के वचन का ज्ञान पाने के लिये प्रार्थना करना व्यर्थ ठहरेगा। यदि हम स्वयं परमेश्वर की इच्छा को पूरा नहीं कर रहे हैं, तो प्रार्थना करना अनुचित होगा कि उसकी इच्छा पृथ्वी पर पूरी हो। फिर, यह प्रार्थना करना कि परमेश्वर आवश्यकता से पीड़ित लोगों की सहायता करे सही नहीं होगा, यदि हम स्वयं किसी की भी सहायता नहीं कर रहे हैं और ऐसे ही अपने उद्धार के लिये भी प्रार्थना करना बिल्कुल व्यर्थ होगा, यदि हम फिलिप्पियों 2:12 में लिखी इस बात पर अमल नहीं कर रहे हैं कि डरते और कांपते हुए अपने-अपने उद्धार का काम पूरा करते जाओ।

नए नियम में मसीह के राज्य के बारे में की गई प्रतिज्ञाएं

जिम ई. वॉलड्रन

आज सारे संसार में मसीहीयत के नाम से हज़ारों प्रकार के सम्प्रदाय या साम्प्रदायिक कलीसियाएं विद्यमान हैं। वे सभी मसीही होने का दावा करते हैं। लेकिन सभी अलग-अलग नामों से कहलाते हैं; अलग-अलग शिक्षाओं को मानते हैं। वास्तव में पहली शताब्दी में भी कुछ ऐसे लोग थे जो मसीह की कलीसिया में और उसके

अनुयायियों के बीच में फूट डालने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन जब प्रेरित पौलुस को इस बात का पता चला था, तो पौलुस ने तुरन्त उनकी इस कोशिश को नाकाम कर दिया था। उसने उनकी कड़े शब्दों में निंदा करके उनसे इस प्रकार कहा था:

> "हे भाइयो, मैं तुमसे हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से विनती करता हूं कि तुम सब एक ही बात कहो, और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो मेरे कहने का अर्थ यह है कि तुम में से कोई तो अपने आप को पौलुस का कोई अपुल्लोस का कोई कैफ़ा का, तो कोई मसीह का, कहता है। क्या मसीह बंट गया? क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया? या तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला?" (1 कुरिन्थियों 1:10, 12-13)।

फिर, उसी पत्री के चौथे अध्याय में पौलुस ने उन्हें लिखकर इस प्रकार कहा था:

> "हे भाइयो, मैं ने इन बातों में तुम्हारे लिये अपनी और अपुल्लोस की चर्चा द्रृष्टान्त की रीति पर की है, इसलिये कि तुम हमारे द्वारा यह सीखो कि लिखे हुए से आगे न बढ़ना, और एक के पक्ष में और दूसरे के विरोध में गर्व न करना।" (1 कुरिन्थियों 4:6)।

इन बातों से हमें यह सीखने को मिलता है, कि मसीह यीशु के अनुयायियों के बीच में जिस तरह की एकता के होने के बारे में यीशु ने प्रार्थना की थी, वह एकता ऐसी होनी चाहिए कि वह यीशु के नए नियम में लिखी हुई बातों के ऊपर ही आधारित हो। साम्प्रदायिक फूट एक पाप है, और मसीह और उसकी शिक्षा के विरूद्ध है। यह एक ऐसी बुराई है जो मसीहीयत के नाम पर ही एक कलंक है। इसलिये, मसीहीयत में आज सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि जितने भी वे लोग जो आज मसीह के सेवक, प्रचारक, पास्टर, अगुए, इत्यादि होने का दावा करते हैं, उन सबको अपनी-अपनी साम्प्रदायिक शिक्षाओं को और रीति-रिवाज़ों को और अपनी-अपनी कलीसियाओं की किताबों को और मनुष्यों की बनाई हुई सभी मंडलियों को छोड़कर परमेश्वर के वचन की पुस्तक में लिखी बातों के पास वापस आना चाहिए। केवल मसीही बनें और प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार को मानकर उसी कलीसिया के सदस्य बनें जिसे आरंभ में स्वयं मसीह ने बनाया था, और जो वास्तव में मसीह और परमेश्वर का राज्य है (इफिसियों 5:5), जिसकी स्थापना आज से 2000 वर्ष पूर्व स्वयं यीशु मसीह ने पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में की थी। और ऐसा करने के लिये जरूरी है कि हम सब पौलुस द्वारा तीमुथियुस को दिये पवित्र आत्मा के आदेशानुसार इस बात को मानें कि:

> "जो खरी बातें तू ने मुझसे सुनी हैं उनको उस विश्वास और प्रेम के साथ, जो मसीह यीशु में है, अपना आदर्श बनाकर रख।" (2 तीमुथियुस 1:13)।

इसमें कोई संदेह नहीं, कि अनेकों लोग ऐसे भी हैं जो इन बातों को पढ़कर और सुनकर हंसी और ठट्ठा करेंगे। वे साम्प्रदायिक प्रेमी हैं, और परमेश्वर द्वारा दिखाए बाइबल के "नमूने के अनुसार" नहीं चलना चाहते। पर ऐसे लोग वे हैं जो परमेश्वर के पवित्र वचन और पवित्र आत्मा का जिसकी प्रेरणा के द्वारा उसका वचन हमें दिया गया है, खुल्लम-खुल्ला निरादर करते हैं। परमेश्वर चाहते हैं कि हम हर एक बात

में उनके आदेशों और आज्ञाओं का ही पालन करें, और इस बात का एक उदाहरण हमें इस बात में मिलता है, जब परमेश्वर ने नूह को एक जहाज़ बनाने की आज्ञा दी थी और उसे यह भी बताया था कि उस जल-पोत को उसे किस प्रकार से बनाना है। (उत्पत्ति 6:14-16) और बाइबल में लिखा है, "परमेश्वर की इस आज्ञा के अनुसार नूह ने किया।" (उत्पत्ति 6:22)। और इसी तरह से आज हमें भी पवित्र आत्मा द्वारा दिए गए उसी नमूने का पालन करना चाहिए, जिसे कलीसिया के संबंध में बाइबल के नए नियम में हमें दिया गया है।

पुराने नियम में से नूह के सम्बंध में दिए उदाहरण को देखने के बाद, एक और बात पुराने नियम से ही हम, यीशु के याजक होने के बारे में देखते हैं, अर्थात यह कि पुराने नियम में याजक हारुन या लेवियों के वंश से ही होते थे, पर यीशु का संबंध मलिकिसिदक से दिखाया गया है, जैसे कि लिखा है:

> "यदि लेवीय याजक पद के द्वारा सिद्धी प्राप्त हो सकती (जिसके सहारे लोगों को व्यवस्था मिली थी) तो फिर क्या आवश्यकता थी कि दूसरा याजक मलिकिसिदक की रीति पर खड़ा हो, और हारुन की रीति का न कहलाए? क्योंकि जब याजक का पद बदला जाता है, तो व्यवस्था का बदलना भी अवश्य है।" (इब्रानियों 7:11-12)।

सो इस प्रकार हम देखते हैं कि याजक का पद बदल जाने के कारण यह आवश्यक हो गया था कि व्यवस्था भी बदली जाती। इसीलिये एक मसीही बन जाने के बाद पौलुस ने नए नियम के बारे में लिखकर इस प्रकार कहा था:

> "क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।" (रोमियों 8:2)।

सो अब, इन अन्त के दिनों में, यहूदा के गोत्र के सिंह के राज्य में, यीशु मसीह की व्यवस्था लागू है, जैसे कि लिखा है, "तुम एक दूसरे का भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरी करो।" (गलतियों 6:2), जिसे "स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था" कहा गया है। (याकूब 1:25)। जहाँ तक पुराने नियम का प्रश्न है, तो पुराना नियम आज हमारे लिये पहले घटी बातों की एक इतिहास की किताब है, जिसे परमेश्वर की प्रेरणा से ही लिखा गया था। पुराने नियम में लिखी बातों के संबंध में कहा गया है:

> "जितनी बातें पहले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गई हैं, कि हम धीरज और पवित्रशास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा आशा रखें।" (रोमियों 15:4)।

पुराने नियम के इतिहास से भी हमें यही सीखने को मिलता है, कि जब परमेश्वर किसी काम को पूरा करने के लिये कोई हिदायत देते हैं तो वे चाहते हैं कि उनके सेवक उस काम को परमेश्वर के वचनानुसार ही करें, जिस प्रकार से मूसा से परमेश्वर ने मन्दिर को बनवाने के समय कहा था:

> "और वे मेरे लिये एक पवित्र-स्थान बनाएं कि मैं उनके बीच निवास करूं। जो कुछ मैं तुझे दिखाता हूं, अर्थात् निवासस्थान और उसके सब सामान का नमूना उसी के अनुसार तुम लोग उसे बनाना।" (निर्गमन 25:8, 9)। और इसके बाद

जब परमेश्वर ने उसे अच्छी तरह से बता दिया था कि किस प्रकार से क्या-क्या उस मन्दिर को बनवाने में लगाना है, उसकी लम्बाई चौड़ाई, इत्यादि तब परमेश्वर ने उससे यूं कहा था, "और सावधान रहकर इन सब वस्तुओं को उस नमूने के समान बनवाना, जो तुझे इस पर्वत पर दिखाया गया है।" (निर्गमन 25:40)।

आज, सुसमाचार के इस युग में परमेश्वर का जो मन्दिर है उसके विषय में पौलुस ने कहा था कि वह और अपुल्लोस उस मन्दिर में परमेश्वर के सहकर्मी हैं:

"क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं; तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो। परमेश्वर के इस अनुग्रह के अनुसार जो मुझे दिया गया, मैंने बुद्धिमान राज-मिस्त्री के समान नींव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है। परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है।" (1 कुरिन्थियों 3:9-10)। "क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है। यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नष्ट करेगा तो परमेश्वर उसे नष्ट करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो।" (1 कुरिन्थियों 3:16-17)।

ऊपर लिखी, पुराने नियम से और नए नियम से वर्णित इन सब बातों से हमें यह सीखने को मिलता है कि प्रत्येक वह जन जो अपने आप को परमेश्वर के वचन का सेवक और यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचारक समझता है, उसे चाहिए कि वह परमेश्वर के वचन में लिखी "खरी बातों" का ही प्रचार करे, और जिस प्रकार से प्रभु यीशु के नए नियम में हमें मिलता है, उसकी कलीसिया के बारे में वैसे ही माने और अन्य लोगों को भी बताएं।

तौभी, हकीकत यह है, कि अधिकतर लोग अपनी-अपनी कलीसियाओं के बनाए नियमों के अनुसार ही चलते हैं। सब लोग आराधना अपने-अपने तौर-तरीकों से करते हैं। मनुष्यों के द्वारा लिखी किताबों में से पढ़कर उपासना करते हैं। मनुष्यों द्वारा ठहराए रीति-रिवाज़ों और त्योहारों को मानते हैं। कॉन्फ्रेंस और सभाएं करके उनमें कलीसियाओं के लिये नियम इत्यादि बनाते हैं। कुछ उन में ऐसे भी होते हैं जो अपनी गवाहियाँ देते हैं और कुछ बताते हैं कि परमेश्वर ने उनके ऊपर या उनके द्वारा किस नई बात को प्रकट किया है। भविष्यवक्ता यिर्मयाह के समय में भी ऐसे ही लोग थे, और उनके बारे में उसने कहा था, कि वे परमेश्वर के वचनानुसार न चलकर स्वयं अपने ही मन के विचारों के अनुसार और इधर-उधर की बातों को सुनकर उनके अनुसार चलते हैं, लिखा है:

"पर उन्होंने मेरी न सुनी, और न मेरी बातों पर कान लगाया; वे अपनी ही युक्तियों और अपने बुरे मन के हठ पर चलते रहे और पीछे हट गए पर आगे न बढ़े।" (यिर्मयाह 7:24)।

आज बहुतेरे ऐसे लोग हैं जो कहते हैं कि वे संसार में मसीह के सुसमाचार का प्रचार कर रहे हैं, पर वे ऐसी-ऐसी बातें करते और सिखाते हैं जिनका मसीह के सुसमाचार से और बाइबल की शिक्षाओं से कोई संबंध ही नहीं है। उन्होंने अलग-अलग नामों की अपनी-अपनी मंडलियाँ बना ली हैं जिनकी वे अगुवाई करते हैं- जो इस बात का प्रमाण हैं कि वे सब उद्धारकर्त्ता यीशु की उस प्रार्थना के विरूद्ध

हैं जिसमें यीशु ने कहा था, कि वे सब एक हों।

क्रूस के ऊपर अपनी मृत्यु से पहले यीशु ने अपने सभी अनुयायियों के एक होकर रहने के लिये जो प्रार्थना की थी, साम्प्रदायिकता ठीक उसी प्रार्थना के विरूद्ध है। यीशु की उक्त प्रार्थना करने के दूसरे ही दिन यीशु को उसके शत्रु उसे यहूदियों की अदालत में खींचकर ले गए थे ताकि उस पर मुकद्दमा चलाकर उसे मुजरिम ठहराया जाए। उसी अदालत में उससे यह पूछा गया था:

> "यदि तू मसीह है तो हम से कह दे। उसने उनसे कहा, यदि मैं तुम से कहूं तो प्रतीति न करोगे; और यदि पूछूं तो उत्तर न दोगे। परन्तु अब से मनुष्य का पुत्र सर्वशक्तिमान परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठा रहेगा।" (लूका 22:67-69)।

यहाँ हम देखते हैं, कि उद्धारकर्त्ता यीशु ने इस्राएलियों की सबसे बड़ी अदालत के सामने भविष्यवक्ता दाऊद की उसी बात की पुष्टि करके कहा था, जिसके विषय में दाऊद ने एक हज़ार साल पहले कहा था, कि वह परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठेगा। (भजन संहिता 110:1-2) यीशु की इस बात को सुनकर उस अदालत ने उसे मृत्यु दण्ड देने की सज़ा सुनाई थी। परन्तु क्योंकि यहूदी उस समय रोम के शासन के अधीन थे, इसलिये उन्होंने यीशु को मृत्युदण्ड की पुष्टि के लिये गवर्नर पिलातुस के पास भेज दिया था।

पिलातुस ने यीशु की जाँच करने के बाद उन लोगों से, जो यीशु को उसके पास लाए थे, कहा था:

> "तुम इस मनुष्य को लोगों का बहकानेवाला ठहराकर मेरे पास लाए हो, और देखो, मैंने तुम्हारे सामने उसकी जाँच की, पर जिन बातों का तुम उस पर दोष लगाते हो उन बातों के विषय में मैंने उसमें कुछ भी दोष नहीं पाया है उससे ऐसा कुछ नहीं हुआ कि वह मृत्यु के दण्ड के योग्य ठहराया जाए।" (लूका 23:14-16)।

इसके बाद, लूका 23:20-24 तक लिखकर, लेखक हमें इस प्रकार बताता है:

> "पर पिलातुस ने यीशु को छोड़ने की इच्छा से लोगों को फिर समझाया, परन्तु उन्होंने चिल्लाकर कहा, "उसे क्रूस पर चढ़ा क्रूस पर।" उसने तीसरी बार उनसे कहा, "क्यों, उसने कौन सी बुराई की है? मैं ने उसमें मृत्युदण्ड के योग्य कोई बात नहीं पाई। इसलिये मैं उसे पिटवाकर छोड़ देता हूं।" परन्तु वे चिल्ला-चिल्लाकर पीछे पड़े गए कि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए, और उनका चिल्लाना प्रबल हुआ। अत: पिलातुस ने आज्ञा दी कि उनकी विनती के अनुसार किया जाए और यीशु को उनकी इच्छा के अनुसार सौंप दिया।" (लूका 23:20-25)। फिर हम इस प्रकार पढ़ते हैं:
>
> "जब वे उसे लिये जा रहे थे, तो उन्होंने शमौन नामक एक कुरेनी को जो गाँव से आ रहा था, पकड़कर उस पर क्रूस लाद दिया कि उसे यीशु के पीछे-पीछे ले चले।" (लूका 23:26) "वे अन्य दो मनुष्यों को भी जो **कुकर्मी** थे उसके साथ घात करने को ले चले। जब वे उस जगह जिसे खोपड़ी कहते हैं पहुंचे, तो उन्होंने वहाँ उसे और उन **कुकर्मियों** को भी एक को दाहिनी और दूसरे को बाईं ओर क्रूसों पर चढ़ाया।" (लूका 23:32, 33)।

आगे चलकर, इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने के संबंध में लिखकर इस प्रकार कहा था:

> "पर हम यीशु को जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था, मृत्यु का दु:ख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहिने हुए देखते हैं, ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से वह हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखे।" (इब्रानियों 2:9)।

लूका, जो कि एक डॉक्टर था, अपनी पुस्तक में लिखकर बड़े ही साफ शब्दों में हमें बताता है, कि यीशु अपनी मृत्यु के बाद तीसरे दिन, जो कि सप्ताह का पहला दिन था, जी उठे थे। उसी दिन के विषय में हम देखते हैं, कि लिखा है, कि अपनी रीति अनुसार कुछ स्त्रियाँ यीशु की कब्र पर आईं थीं, हम पढ़ते हैं:

> "परन्तु सप्ताह के पहले दिन बड़े भोर को वे उन सुगंधित वस्तुओं को जो उन्होंने तैयार की थीं, ले कर कब्र पर आई।" (लूका 24:1) लेकिन उनसे कहा गया था:
>
> "वह यहाँ नहीं; परन्तु जी उठा है। स्मरण करो कि उसने गलील में रहते हुए तुम से कहा था, अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ में पकड़वाया जाए, और क्रूस पर चढ़ाया जाए, और तीसरे दिन जी उठे।" (लूका 24:6-7)।

सप्ताह के उसी पहले दिन को, यीशु के दो चेलों ने उसकी मृत्यु के बाद का तीसरा दिन कहकर सम्बोधित करके कहा था, "इन सब बातों के सिवाय इस घटना को हुए तीसरा दिन है।" (लूका 24:21)।

अपने जी उठने के बाद भी यीशु अपने चेलों को अपने राज्य के आने के बारे में बताते रहे, जैसे कि हम प्रेरितों के कामों की पुस्तक के आरंभ में पढ़ते हैं।

प्रायश्चित

जोएल स्टीफ़न विलियम्स

यीशु को, क्रूस पर उसकी मृत्यु के द्वारा, संसार के सब लोगों के पापों का 'प्रायश्चित' ठहराया गया था। यदि आपने क्रूस पर चढ़ाए गए यीशु के कष्टों और उसकी मृत्यु के बारे में कभी भी सुना या पढ़ा नहीं है तो आप बाइबल में इस बारे में पढ़ सकते हैं। (मत्ती 27:27-52; मरकुस 15:16-39; लूका 23:46-48; यूहन्ना 19:16-37)। पुराने नियम में पशुओं के जिन बलिदानों के विषय में हम पढ़ते हैं, उनके द्वारा परमेश्वर लोगों को पहले ही से प्रायश्चित के महत्व को समझा रहा था। (रोमियों 15:4; 1 कुरिन्थियों 10:6)। जैसे कि पुराने नियम में हम पढ़ते हैं, कि जब मिस्र के लोगों की हठधर्मी के कारण उनके पहिलौठे पुत्र मर रहे थे, तो परमेश्वर ने इस्राएलियों को आज्ञा देकर कहा था के वे अपने-अपने घरों में एक निर्दोष मेमने को बलिदान करें। और मेमने के लहू को उन्हें अपने घरों के दरवाज़ों की चौखटों पर लगाना था। और जिन घरों के द्वारों पर लहू लगा हुआ था, उनमें मृत्यु ने प्रवेश नहीं किया था। इसके द्वारा परमेश्वर ने लोगों को भविष्य में होनेवाले यीशु के प्रायश्चित-रूपी बलिदान के विषय

में सिखाया था। यीशु के बहाए लहू के द्वारा आज हम अनन्त मृत्यु से बच सकते हैं।

ऐसे ही पुराने नियम में हम यहूदियों के प्रायश्चित के दिन के बारे में भी देखते हैं। उनसे कहा गया था कि वे दो बकरे लें। उनमें से एक को बलिदान किया जाए और उसके लहू को यहूदियों के मन्दिर में छिड़का जाए। फिर उनका महायाजक दूसरे बकरे पर अपने हाथ रखे। और इस प्रकार से सभी लोगों के पापों के लिये उस निर्दोष बकरे को पापी घोषित करे। फिर उस बकरे को दूर जंगल में छोड़ दिया जाए। ऐसा करके लोगों को यह समझाया जाता था कि उनके पाप उनसे दूर हो गए हैं। बलिदान और लहू बहाए जाने के द्वारा पापों से मुक्ति हो जाती थी। ऐसा उन्हें सिखाया जाता था। ''सच तो यह है कि व्यवस्था के अनुसार प्राय: सब वस्तुएँ लहू के द्वारा शुद्ध की जाती हैं, और बिना लहू बहाए पापों की क्षमा नहीं।'' (इब्रानियों 9:22)। यीशु मसीह, ऐसे ही अपने बलिदान के द्वारा आज हमारे पापों का प्रायश्चित है। जैसे कि लिखा है: ''वोह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे कि हम पापों के लिये मरकर धार्मिकता के लिये जीवन बिताएँ: उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।'' (1 पतरस 2:24)।

पुराने नियम के काल में हुए पशु-बलिदान मनुष्य के पापों का स्थायी समाधान नहीं था। किन्तु वे सभी बलिदान उस एक आनेवाले बलिदान की ओर संकेत दे रहे थे, जिसे परमेश्वर तैयार कर रहा था। (गलतियों 3:23-25; 4:4) उन बलिदानों के द्वारा परमेश्वर लोगों को सिखा रहा था कि वे उसकी आज्ञा मानें और उस पर भरोसा रखें। वे सभी बलिदान उदाहरण के रूप में थे। इब्रानियों की पत्री का लेखक कहता है, कि ''यह अनहोना है कि बैलों और बकरों का लहू पापों को दूर करे।'' (इब्रानियों 10:4)। पर क्रूस पर हुआ यीशु का बलिदान और उसका बहाया लहू हमारे पापों का स्थायी और उचित समाधान है। यूहन्ना ने यीशु को देखकर, इसलिये सही कहा था, कि, ''यह परमेश्वर का मेमना है जो जगत के पापों को उठा ले जाता है।'' (यूहन्ना 1:29)। यीशु ने सारे जगत के पापों के बदले में स्वयं अपने आप को ही बलिदान कर दिया था। जैसे कि लिखा है, कि, ''अब युग के अन्त में वोह एक ही बार प्रकट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे।'' (इब्रानियों 9:26)।

प्रायश्चित के विषय में ही पुराने नियम में से यशायाह 52:13-53:12 को पढ़कर भी समझा जा सकता है। नए नियम में भी इसका हवाला हमें मिलता है (प्रेरितों. 8:32-35)। यशायाह 53 अध्याय में परमेश्वर के धर्मी दास का तात्पर्य यीशु से ही है। (यशायाह 53:7,9)। जैसे उसके सताए जाने के बारे में लिखा है, वैसे ही यीशु को भी सताया गया था। (यशायाह 53:5,8,12)। उसके दुख अचानक नहीं थे, पर वे परमेश्वर की ठहराई पूर्व योजना के अनुसार थे। (यशायाह 53:6,10; प्रेरितों. 2:23; 1 पतरस 1:20)। उसने उन सब दुखों को एक ख़ास कारण से सहा था। (यशायाह 53:4-6, 12; 2 कुरिन्थियों 5:21)। और फिर वोह अंत में सभी दुखों को उठाने के बाद विजयी हुआ था। (यशायाह 53:11-12; रोमियों 8:37; 1 कुरिन्थियों 15: 54-57)। मसीह की मृत्यु में हमें पाप पर और मृत्यु और शैतान पर विजय मिलती है। (इब्रानियों 2:14; कुलुस्सियों 2:14,15)।

यीशु ने स्वयं अपनी मृत्यु की घोषणा इन शब्दों में की थी: ''यह वाचा का मेरा

वोह लहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है।'' (मत्ती 26:28)। यीशु की मृत्यु का वर्णन करके पौलुस ने कहा था कि ''लहू बहाने के कारण वोह एक प्रायश्चित ठहरा है।'' (रोमियों 3:25)। मसीही लोगों को लिखकर पतरस ने कहा था कि पाप से तुम्हारा छुटकारा ''निर्दोष और निष्कलंक मेमने, अर्थात मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ है।'' (1 पतरस 1:19)। यीशु ने अपना लहू बहाकर ''हर एक कुल और भाषा और लोग और जाति में से परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया है।'' (प्रकाशित. 5:9; इफिसियों 1:7; 5:25; मरकुस 10:45; प्रेरितों 20:28; 1 कुरिन्थियों 6:19, 20; 1 यूहन्ना 1:7)।

यीशु की मृत्यु जगत के सब लोगों के लिये थी। जो लोग ऐसा समझते हैं कि यीशु केवल कुछ चुने हुए लोगों के लिये ही क्रूस पर मरा था, उनकी सोच गलत है। क्योंकि बाइबल में लिखा है कि यीशु की मृत्यु सारे जगत के सब लोगों के पापों के प्रायश्चित के लिये थी। (यूहन्ना 1:29; 3:16-17; 4:42; 2 कुरिन्थियों 5:19; 1 यूहन्ना 2:2; 4:14)। वोह ''सबके'' लिये मारा गया था। (2 कुरिन्थियों 5:14; 1 तिमुथियुस 2:6; इब्रानियों 2:9; तितुस 2:11)। सब पापियों के लिये (1 तिमुथियुस 1:15; रोमियों 5:6-8)। और उनके लिये भी जो बचकर खो गए हैं (2 पतरस 2:1)। क्योंकि परमेश्वर सब को बचाना चाहता है (2 पतरस 3:9; 1 तिमुथियुस 2:4)। पर यद्यपि यीशु ने सबके लिये अपनी जान दी थी, तौभी केवल इसीलिये सब नहीं बचेंगे। प्रायश्चित सबके पापों के लिये हुआ था, पर उद्धार उन्हीं का होगा जो विश्वास करेंगे। (1 तिमुथियुस 4:10)

यीशु ने परमेश्वर की इच्छा और आज्ञा को मानकर हम सबके पापों का प्रायश्चित करने को स्वयं अपने आप को हमारे स्थान पर मरने को दे दिया था। यीशु पाप-रहित था। उसमें कोई दोष या पाप नहीं था। उसे मरने की आवश्यकता नहीं थी। उसने स्वयं अपनी ही इच्छा से हमारे पापों को अपने ऊपर ले लिया था, और हमारे स्थान पर हमारे पापों के दण्ड को भी अपने ऊपर ले लिया था। उसने पाप की उस दीवार को ढहा दिया था जो परमेश्वर और इनसान के बीच में थी। (यशायाह 59:1, 2)। जैसे कि प्रेरित पतरस ने कहा था : ''इसलिये कि मसीह ने भी, अर्थात अधर्मियों के लिये धर्मी ने, पापों के कारण एक बार दुख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुँचाए'' (1 पतरस 3:18)। प्रायश्चित का अर्थ बताने के तात्पर्य से पौलुस ने यह कहा था:

क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा। किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है; परन्तु हो सकता है किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी साहस करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा। अत: जबकि हम अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से क्यों न बचेंगे? क्योंकि बैरी होने की दशा में उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ, तो फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे? (रोमियों 5:6-10)।

इसी कारण से केवल यीशु मसीह ही सब मनुष्यों के लिये उद्धार पाने की आशा है। ''किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा

नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सके'' (प्रेरितों 4:12)। कोई भी बिना उसके पिता के पास नहीं आ सकता है (यूहन्ना 14:6)।

पाप की मजदूरी तो मृत्यु है (रोमियों 6:23), किन्तु परमेश्वर ने किसी निष्पाप मनुष्य का बलिदान नहीं माँगा। परमेश्वर ने ऐसा नहीं कहा, कि ''अपने पापों के लिये किसी नवजात शिशु को बलिदान करो।'' बल्कि, परमेश्वरत्व में का एक व्यक्तित्व स्वयं अपनी ही इच्छा से एक कुंवारी से जन्म लेकर मनुष्य बनकर पृथ्वी पर आ गया था। वोह, परमेश्वर, एक पुत्र के रूप में, पृथ्वी पर एक सिद्ध और पाप-रहित मनुष्य बनकर रहा था। अर्थात, स्वयं परमेश्वर ने हमारे पापों के लिए बलिदान दिया था। क्रूस पर यीशु की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर ने अपना प्रेम सारी मानवता पर प्रकट किया था। (यूहन्ना 3:16; रोमियों 5:8; इफिसियों 5:25)। इसी कारण से मसीही लोग क्रूस पर मसीह की मृत्यु का प्रचार सभी जगह करते हैं (1 कुरिन्थियों 1:23; 2:2; 15:1-4; गलतियों 6:14)। हम परमेश्वर को उसके वरदान और बलिदान के लिए धन्यवाद देते हैं। परमेश्वर के प्रेम से प्रेरणा पाकर हम अपना जीवन उसकी इच्छा पर चलकर बिताना चाहते हैं। (मरकुस 8:34-37; 1 यूहन्ना 4:19; 2 कुरिन्थियों 5:14-15 यूहन्ना 12:32: 15:13; फिलिप्पियों 3:10; 1 पतरस 2:21; फिलिप्पियों 2:5-8; इब्रानियों 12:1-3)। हम जो मसीही हैं, हम अपनी किसी विशेषता पर घमण्ड नहीं करते। हमारा सब कुछ और हमारी महिमा केवल मसीह है जिसने अपने आप को हमारे लिये दे दिया था। (गलतियों 6:14; 2 कुरिन्थियों 4:5)।

मसीही स्त्री के लिये परमेश्वर की योजना

सूज़ी फ्रैड्रिक

परमेश्वर के लिये आप महत्त्वपूर्ण हैं, तथा उसके पास आपके लिये एक योजना है। यदि आप ऐसा जीवन व्यतित कर रही हैं जैसा परमेश्वर चाहता है तो वह आपको कई तरीकों से आशिष देगा। किस प्रकार से परमेश्वर चाहता है कि आप अपना जीवन व्यतीत करें? मसीही स्त्रियों को किन-किन बातों से दूर रहने के लिये कहा गया है? बाइबल में इन प्रश्नों का उत्तर दिया गया है अर्थात परमेश्वर का वचन जो लिखित रूप में दिया गया है हमें बताता है कि एक मसीही स्त्री को कैसा होना चाहिए।

संसार की रचना के छटवें दिन परमेश्वर ने मनुष्य की रचना की थी। सबसे पहिले उसने पुरुष को बनाया परन्तु परमेश्वर यह भी जानता था कि पुरुष को एक सही सहायक की आवश्यकता पड़ेगी (उत्पत्ति 2:18) इसलिये परमेश्वर ने पुरुष को गहरी नींद में सुला दिया। जब वह सो रहा था तब परमेश्वर ने पुरुष की एक पसुली निकालकर उसकी सन्ती मांस भर दिया और उसने उस पसली को जो उसने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया।'' (उत्पत्ति 2:21-22)। आरंभ से ही परमेश्वर ने स्त्री को कुछ आवश्यक जिम्मेवारियां दी थीं। अपने पति की सहायता करना तथा परमेश्वर की सेवा अपने पति के साथ मिलकर करना और बहुत से ऐसे तरीके हैं

जिनके द्वारा हम इन जिम्मेवारियों को निभा सकते हैं। हम यह देखना चाहते हैं कि बाइबल हमारे घरों में जिम्मेवारियों तथा कलीसिया में हमारे योगदान के विषय में क्या कहती है?

परिवार में मसीही स्त्री: बाइबल हमें बताती है कि स्त्री को अपने पति के आधीन रहना चाहिये। (देखिये 1 तीमुथियुस 2:11-14)। इस आधीनता का अर्थ यह नहीं होना चाहिये कि पत्नी को दु:खों से होकर गुजरना पड़े, जैसा कि कुछ लोग सोचते हैं या विश्वास करते हैं। इफिसियों 5:22-33 से हमें पता चलता है कि पति को अपनी पत्नी से प्रेम करना चाहिये और इस प्रकार से प्रेम करना है जैसे यीशु ने अपनी कलीसिया से किया था- अर्थात उसने कलीसिया के लिये अपने प्राणों को भी दे दिया। एक पति जिस प्रकार से अपने शरीर की चिन्ता करता है उसी तरह से उसकी जिम्मेवारी है कि वह अपनी पत्नी की भी देखभाल करे। पत्नी को अपने पति का आदर करना चाहिये। यह एक बहुत सुन्दर रिश्ता है। इस रिश्ते की बुनियाद एक दूसरे के प्रति प्रेम पर आधारित है।

एक स्त्री को अपने घर को एक सुन्दर स्थान बनाने का पूरा प्रयत्न करना चाहिये। अपने घर को अच्छी तरह से साफ़-सुथरा रखकर हम ऐसा कर सकते हैं। अपने बच्चों को दयालु तथा एक नेक इन्सान बनने का प्रक्षिषण दें, तथा उन्हें यह सिखायें कि हर एक स्थिति में मसीही व्यावहार दिखायें (1 तीमु. 5:14)। पहुनाई करने (मेहमानों की देखभाल) में भी अपने पति की सहायता करनी चाहिये। परमेश्वर ने जो हमें आशीषें दी हैं उन्हें दूसरों के साथ बांटना चाहिये। इन बातों को करके हम अपने पतियों की सहायता कर सकते हैं ताकि वे कलीसिया में अच्छे अगुवे बन सकें। (1तीमु. 3:2-5, 11)।

यदि किसी स्त्री का पति मसीही नहीं है तो वह एक विशेष तरह से उसकी सहायता कर सकती है। यदि आप अपने पति के आधीन है तो आप अपने अच्छे मसीही व्यवहार से उसे प्रभु यीशु के पास ला सकती हैं। जिस प्रकार से पतरस ने कहा था, ''हे पत्नियों, तुम भी अपने पति के आधीन रहो। इसलिये कि यदि इनमें से कोई ऐसे हो जो वचन को न मानते हों, तौभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चाल-चलन को देखकर बिना वचन के अपनी-अपनी पत्नी के चाल-चलन के द्वारा खिंच जाएं। (1 पतरस 3:1-2)।

हमारे शब्दों से अच्छा उदाहरण हमारा खुद का धार्मिक जीवन होता है।

आविवाहित स्त्रियों को भी अपनी जिम्मेवारियों को परिवार में समझना चाहिये। जब हम अपनी आशीषों को उनके साथ बांटते हैं, जो सुसमाचार को फैलाते हैं तो हम उन्हें यीशु मसीह के साथ बांटते हैं तथा हमें इसका प्रतिफल भी मिलेगा (मत्ती 10:40-42)। बहुत से ऐसे कार्य हैं जो स्त्रियां कर सकती हैं और जिनके लिये विवाहित होना आवश्यक नहीं है, जैसे कि, ''जो भले काम में सुनाम रही हो, पाहुनों (घर पर आये मेहमानों) की सेवा की हो, पवित्र लोगों के पांव धोएं हो, दुखियों की सहायता की हो, और हर एक भले काम में मन लगाया हो।'' तथा जो नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित हो।'' (1 पतरस 3:4)।

बाइबल बूढ़ी स्त्रियों के विषय में क्या कहती है? उनकी क्या-क्या जिम्मेवारियां हैं?

कोई भी व्यक्ति कभी भी मसीही सेवा करने से रिटायर नहीं होता। परमेश्वर आप से हमेशा यह अपेक्षा करता है कि आप अपनी पूरी योग्यता से उसकी सेवा करें। बाइबल कहती है, ''जो काम तुझे मिले उसे अपनी शक्ति भर करना'' (सभोपदेशक 9:10)। बूढ़ी स्त्रियों को जवान स्त्रियों के सामने एक अच्छा उदाहरण रखना चाहिये। इस तरह से अपना जीवन बितायें ताकि जवान स्त्रियां आपका आदर करें, और आपकी अच्छाईयों को अपने जीवन में अपनायें, जबकि आप प्रभु यीशु को अपने जीवन का आदर्श बनाकर चलती है।

यदि आप एक अच्छा उदाहरण हैं, तो आप जवान स्त्रियों को यह सिखाने के योग्य हो सकेगी कि, ''वे अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें। और संयमी, पतिव्रता, घर का कारबार करने वाली भली और अपने-अपने पति के आधीन रहने वाली हों, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न हो।'' (तीतुस. 2:3-5)। जबकि आप आयु में बढ़ती हैं तब हमेशा गलतियों 6:9 को याद रखिये जहां लिखा है, ''हम भले काम करने में हियाव न छोड़ें क्योंकि यदि हम ढीले न हो तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।''

कलीसिया में मसीही स्त्रियों तथा बाइबल में सारे मसीहीयों, को कुछ शिक्षाएं दी गई है और वे हैं कलीसिया में उनके कार्य तथा उपासना के विषय में। इनमें से कुछ अज्ञाएं इस प्रकार से हैं: गीत गाना (इफ़ि. 5:19), प्रार्थना करना (1थिस्स. 5:17-18), तथा हर्ष के साथ अपने चन्दे को देना (2 कुरि. 9:7)। स्त्रियों को यह भी आज्ञा दी गई है कि वे दूसरी स्त्रियों को सिखायें जैसे कि हमने पहिले भी तीतुस के 2 अध्याय में देखा था।

लेकिन कुछ कार्य ऐसे हैं जो कलीसिया में केवल पुरुषों को ही करने के लिये दिये गये हैं। जैसे कि ऐलडर (अध्यक्ष) तथा डीकन केवल पुरुष ही होते हैं।

बाइबल हमें बताती है कि यह कार्य केवल पुरुषों का हैं जो एक पत्नी के पति हैं। (1तीमु. 3:13; तीतुस 1:5-6)। कलीसिया की सभाओं में केवल पुरुषों को ही प्रचार करने तथा अगुवाई के लिये कहा गया है। जब मसीही पुरुष कलीसिया की सभा में उपस्थित हों, तब पुरुषों को सिखाने का और प्रचार करने का अधिकार दिया गया है तथा स्त्रियों को पूरी आधीनता के साथ सीखने के लिये कहा गया है, और पुरुष पर अधिकार चलाने के लिये मना किया गया है। ''और स्त्री को चुपचाप पूरी आधीनता से सीखना चाहिए। और मैं कहता हूं, कि स्त्री न उपदेश करे, और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे।'' (1तीमुथियुस 2:11-12)।

यह आवश्यक है कि मसीही स्त्रियां कलीसिया के कार्यों में भाग लें, परन्तु जैसा बाइबल में सिखाया गया है हम स्त्रियों को अपनी सीमा में रहकर कार्य करना है। सभा के बीच में खड़े होकर प्रचार करने का कार्य केवल पुरुषों का है।

क्या आप अपने जीवन में परमेश्वर की योजना को लेकर चल रही है? क्या आप एक मसीही स्त्री है? क्या आप अपने परिवार में प्रभु को प्रसन्न कर रही हैं? क्या आप अपने जीवन की तुलना बाइबल में बताई गई मसीही स्त्रियों से कर सकती है, जो प्रत्येक बात में तथा आत्मिकता में परमेश्वर को प्रसन्न करें?